शेखर : एक जीवनी - कथ्य और शिल्प

श्री श्याम नन्दन (सहायक आचार्य)
हिंदी विभाग, मानविकी एवं भाषा संकाय
महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी (बिहार) - 845401

Email: shyamnandan@mgcub.ac.in

स्नातकोत्तर हिंदी, द्वितीय सेमेस्टर

प्रश्नपत्र: हिन्दी उपन्यास (HIND4008)

❖ अनुक्रम

- ➢ शेखर : एक जीवनी
  - कथ्य :- शेखर : एक प्रशांत विद्रोही , व्यक्ति स्वातंत्र्य की खोज एवं अन्य विषय
  - शिल्प :- कथानक-संयोजन, भाषा एवं शैली, पात्र एवं चरित्र-चित्रण, संवाद-योजना, देशकाल एवं वातावरण तथा उद्देश्य
- ➢ निष्कर्ष
- ➢ सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

❖ शेखर : एक जीवनी

- प्राण-दंड के कारण उत्पन्न घनीभूत वेदना की एक रात में देखे विजन को शब्दबद्ध करने का उपन्यासात्मक प्रयास है|
- उपन्यास की संवेदना तीन भागों में विभाजित है|
- "तीनों भाग एक ही कथासूत्र में बंधे होकर भी अलग-अलग भी प्राय: सम्पूर्ण हैं | कहा जा सकता है की जीवनी तीन स्वतंत्र उपन्यासों का अनुक्रम है| " – अज्ञेय
- 'शेखर: एक जीवनी' के दो ही भाग प्रकाशित हैं| तीसरा भाग अप्रकाशित है|

- ‘शेखर: एक जीवनी’ का पहला भाग 1940 ई. में तथा दूसरा भाग 1944 ई. में प्रकाशित हुआ था |
- प्रथम भाग का नाम ‘उत्थान’ है, जिसके चार खंड हैं- ‘ऊषा और ईश्वर’, ‘बीज और अंकुर’, ‘प्रकृति और पुरुष’ तथा ‘पुरुष और परिस्थिति’|
- द्वितीय भाग का नाम ‘संघर्ष’ है और यह भी चार खण्डों में विभक्त है – ‘पुरुष और परिस्थिति’, ‘बंधन और जिज्ञासा’, ‘शशि और शेखर’ तथा ‘धागे, रस्सियाँ और गुन्झर’ |
- ‘शेखर: एक जीवनी’ का तीसरा भाग अप्रकाशित रहने से जीवनी का विजन और उपन्यास अधूरा है |

❖ शेखर : एक प्रशांत विद्रोही

- शेखर जन्मजात विद्रोही है। उसकी मान्यता है कि विद्रोही बनते नहीं बल्कि पैदा होते हैं।
- शेखर, हर उस सामाजिक बन्धन के प्रति विद्रोही है, जो व्यक्ति के स्वतन्त्र विकास में बाधक है।
- शेखर, शिक्षा-पद्धति से खिन्न होकर उससे भी विद्रोह कर उठता है। उसे लगता है कि यह शिक्षा-पद्धति 'टाइप' बनाती है, 'व्यक्ति' नहीं।
- माँ द्वारा शेखर पर अविश्वास प्रकट किए जाने पर शेखर का 'विद्रोह-भाव' प्रबल हो उठता है और वह प्रतिज्ञा करता है कि "वह कभी हार नहीं मानेगा। वह योग्य था और योग्य ही रहेगा।" इसी संकल्प के साथ शेखर 'प्रशान्त विद्रोही' बन गया है।
- शेखर के भीतर का 'अहं' भाव उसके 'प्रशान्त' विद्रोह के मूल में है।
- 'शेखर: एक जीवनी' के द्वितीय भाग में शेखर की विद्रोही-भावना परिष्कृत होती है। शशि, बाबा मदन सिंह, मोहसिन तथा अन्य पात्र उसके 'अहं' और 'विद्रोह' को परिमार्जित और परिष्कृत करते हैं।

❖ व्यक्ति स्वातंत्र्य की खोज

- शेखर, हर उस सामाजिक बन्धन के प्रति विद्रोही है, जो व्यक्ति के स्वतन्त्र विकास में बाधक है।
- जन्म लेते ही अबोध बालक को रूढ़ि में बाँधने का सहज प्रयास करने वाले समाज से शेखर प्रश्न करता है- "कहते हैं मानव अपने बन्धन आप बनाता है पर जो बन्धन उत्पत्ति के समय ही उसके पैरों में पड़े होते हैं, और जिनके काटने भर में ही अनेक जीवन बीत जाते हैं, उनका उत्तरदायी कौन है?''
- शेखर, 'टाइप' बनाने वाली शिक्षा-पद्धति से विद्रोह करता है| शेखर प्रतिलिपि नहीं बनना चाहता, वह बनता है'व्यक्ति' |
- केले के तनों से बनी नाव पर नदी की यात्रा का जंगल में पक्षियों की उन्मुक्त उड़ान आदि शेखर के स्वातंत्र्य की खोज संबंधी विचारों को प्रकट करते हैं|
- शेखर, समाज की रूढ़िग्रस्त परंपराओं के स्थान पर नए नैतिक मूल्यों की स्थापना का पक्षधर है|

❖ कुछ अन्य विषय

- उपन्यास में बाल मनोविज्ञान, वय: संधि और किशोर-मनोविज्ञान का उत्कृष्ट चित्रण हुआ है|
- उपन्यास में दलित-प्रश्न भी आया है|
- द्वितीय भाग में शेखर जेल में बन्द रहने के दौरान हिंसा-अहिंसा, क्रोध और कर्तव्य , राष्ट्रीय अभिमान, अंहकार की सामाजिक कर्तव्यपरकता, मानव-प्रकृति तथा नीति आदि विषयों पर उपन्यासकार का दर्शन प्रतिपादित है|
- विदेशी वस्त्रों की होली जलाने और स्वदेशी एवं स्वतन्त्रता-आन्दोलन आदि का विचार संकेतपूर्ण है|

❖ शिल्प

कथानक संयोजन

- ‘शेखर: एक जीवनी’ में अज्ञेय ने उपन्यास के केन्द्रीय पात्र ‘शेखर’ के जीवन की कथा ‘शेखर’ के ही अवलोकन बिन्दु से प्रस्तुत की है।
- “अज्ञेय के ‘शेखर: एक जीवनी’ में जो पात्र किस्सागो की भूमिका ग्रहण करता है, वही उपन्यास का विषय भी है।
- अज्ञेय ने जो ‘आत्मकथा’ प्रस्तुत की है, वह उनके उपन्यास के केन्द्रीय पात्र की लिखित आत्मकथा ही है, पर उसकी प्रकृति बिल्कुल भिन्न है.... ‘शेखर’ का शेखर अपने ही चरित्र की पड़ताल और प्रस्तुति करता है, पर उसे बतौर ‘अन्य’ व्यक्ति देखते हुए।
- ‘आपबीती ’ को स्वयं द्वारा ‘परबीती’ के रूप में उपन्यास की कथा-प्रस्तुति हुई है|

- अज्ञेय ने ‘शेखर: एक जीवनी’ की रचना ‘प्रत्यगदर्शन’ (Flash Back) शैली में की है।
- अज्ञेय ने इस उपन्यास में ‘आनुभविक काल’ का प्रयोग किया है।
- अज्ञेय ने ‘शेखर: एक जीवनी’ में घटनाओं के तार ही नहीं बल्कि उनका ‘कालक्रम’ भी तोड़ दिया। अज्ञेय के ही अनुसार “जैसे मोतियों की माला टूट गयी हो और बिखरे मोतियों को फिर से बेतरतीब लड़ी में पिरो दिया जाए, उसी तरह से मेरी स्मृतियों की तरतीब उलझ सी गयी है।”

❖ भाषा एवं शैली

- ‘शेखर: एक जीवनी’ में शुद्ध साहित्यिक हिंदी के तत्सम शब्द, ठेठ देशज, अंग्रेजी और अरबी फारसी के शब्द प्रयुक्त हुए हैं , जिससे उनकी भाषा समृद्ध हो गयी है।
- इस उपन्यास में अज्ञेय ने बहुत-सी पंक्तियाँ पूरी तरह अंग्रेजी में ही लिखी हैं। जैसे- (Such a big silly boy like you" One log good bye?)
- उपन्यास में कई पाश्चात्य अंग्रेज कवियों की कविताओं को अज्ञेय ने पूरी तरह अंग्रेजी में लिखा है किन्तु पाठकों को समझने के लिए फुटनोट में उनका हिंदी अर्थ भी दे दिया है।”

- अज्ञेय की संस्कृतनिष्ठ भाषा हिंदी उपन्यास की भाषिक सर्जनात्मकता को उत्कर्ष पर पहुँचाने का काम किया |
- उपन्यास की भाषा पात्रों के परिवेश और और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति में पूरी तरह सफल हुई |
- मनोवैज्ञानिक उपन्यास की भाषा, कविता की भाषा के बहुत निकट पहुँचती है, 'शेखर: एक जीवनी' की भाषा अनेकत्र इसे प्रमाणित करती है।
- 'मौन की भाषा' जो कविता की एक उल्लेखनीय विशेषता मानी जाती है, 'शेखर: एक जीवनी' में बहुत सफलता के साथ प्रयुक्त हुई है।"(गोपाल राय)

❖ पात्र एवं चरित्र-चित्रण

- उपन्यास में प्रमुख और गौण कुल मिलाकर 85 से अधिक पात्र आए हैं |
- शेखर उपन्यास का केन्द्रीय पात्र और नायक है|
- उपन्यास में सभी पात्रों की उपयोगिता है|
- सभी पात्रों का शेखर के व्यक्तित्व-निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है|
- मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में पात्रों की संख्या कम होती है किन्तु यह उपन्यास इसका अपवाद है|

❖ संवाद-योजना

- उपन्यास योजना मनोवैज्ञानिक उपन्यास की संरचना के बिलकुल अनुकूल है|
- पात्रों के संवाद छोटे, सहज और सरल हैं|
- संवाद-योजना पात्रानुकूल एवं भावाभिव्यक्ति में पूर्णरूप से सक्षम है|

❖ देशकाल एवं वातावरण तथा उद्देश्य

- **‘शेखर : एक जीवनी’ अपने युगीन जीवन और परिवेश के यथार्थ चित्रण में एक सफल रचना है।**
- **‘शेखर: एक जीवनी’ का लक्ष्य, शेखर के चरित्र का अन्वेषण और उसके व्यक्तित्व की निर्मिति की मनोवैज्ञानिक व्याख्या और मनोविश्लेषण है।**
- ***“शेखर एक जन्मना ‘विद्रोही’ पात्र है, जिसके मन के विकास का अध्ययन उपन्यासकार का अभिप्रेत है|”* (गोपाल राय)**

❖ निष्कर्ष

- ‘शेखर: एक जीवनी’ हिन्दी मनोवैज्ञानिक उपन्यास परम्परा की प्रौढ़तम कृति है|
- ‘शेखर: एक जीवनी’ के माध्यम से अज्ञेय, शेखर के जीवन के आन्तरिक और बाह्य, सभी पक्षों का चित्रण करने के साथ ही शेखर के व्यक्तित्व की निर्मिति के मूल कारणों का मनोविश्लेषणात्मक चित्रण करते हैं।
- प्रेमचंद ने कहा था कि आने वाला उपन्यास ‘चरित्र प्रधान’ होगा और यह उपन्यास उनके इस कथन को चरितार्थ करने वाली कृति है।

❖ सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

- शेखर: एक जीवनी (भाग- 1) अज्ञेय, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, संस्करण- 2014
- शेखर: एक जीवनी (भाग- 2) अज्ञेय, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, संस्करण- 2014
- उपन्यास की संरचना, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण- 2014
- हिंदी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण- 2016
- हिंदी उपन्यास: एक अन्तर्यात्रा, रामदरश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2012

धन्यवाद